Date : 20 अक्टूबर 2022

लोथल : एक सभ्यता

लोथल : एक सभ्यता

संदर्भ- हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोथल में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिषद की समीक्षा की। पीएम ने कहा कि हमारे इतिहास के कई ऐसे हिस्से हैं जिन्हें भुला दिया गया है।

लोथल-

- लोथल विश्व का प्राचीनतम ज्ञात गोदीबाड़ा के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र है।
- लोथल का शाब्दिक अर्थ मृतकों का घाव होता है। माना जाता है कि 2200 ई.पू. में साबरमती के तट पर यह शहर मिट्टी के बर्तन बनाने वालों का निवास स्थान रहा होगा। वर्तमान में यह अहमदाबाद के निकट भोगवा नदी के तट पर स्थित है।
- 1954-63 में डॉ एस आर राव के नेतृत्व में लोथल की खोज की गई।
- मार्च 2019 में केंद्र सरकार ने लोथल के इतिहास को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिषद परियोजना को सहमति दी।

लोथल की विशेषताएं-

- गोदीबाड़ा- लोथल का गोदीबाड़ा हड़प्पा सभ्यता समेत विश्व की सभी सभ्यताओं के लिए आश्चर्य का विषय है। गोदीबाड़ा जहाजों के निर्माण, मरम्मत, रुकने का स्थान होता है, जहाँ पर नौसैनिक आपूर्ति के भण्डारण के लिए भी गोदीबाड़ा का प्रयोग किया जाता है।

- व्यापारिक केंद्र- लोथल में निर्मित वस्तुएं ईरान, इराक व बहरीन आदि देशों में प्रसिद्ध थी। इस व्यापार को यहां के गोदीबाड़ा ने सुगम बनाया।
- कृषि- यहाँ से धान व बाजरे के साक्ष्य मिले हैं।
- शवाधान- लोथल में युग्म शवाधान प्राप्त हुए हैं। जो उस काल में सती प्रथा जैसी कोई प्रथा की ओर संकेत करते हैं।
- स्वच्छता- शहर में उचित जल निकास प्रणालियाँ, स्नानागृह व शौचालयों के संकेत नगर की स्वच्छता तकनीक को इंगित करती है।

वैश्विक दृष्टि से विशेषताएं-

- लोथल साइट को वर्ष 2014 में विश्व विरासत स्थल के लिए नामित किया गया था। जो अभी यूनेस्को की अस्थायी सूची में सुरक्षित है।
- एक ऊपरी और निचले शहर वाले महानगर के उत्तरी हिस्से में खड़ी दीवार, इनलेट और आउटलेट चैनलों के साथ एक बेसिन था जिसे ज्वारीय गोदी के रूप में पहचाना गया है। यह सिंधु घाटी सभ्यता का एकमात्र बंदरगाह वाला शहर है।
- उपग्रह छवियों से ज्ञात होता है कि नदी चैनल उच्च ज्वार के दौरान वहां अत्यधिक पानी लाता होगा और बेसिन को पानी से भर देता होगा, और जहाजों को ऊपर की ओर आने में आसानी होती होगी। किंतु अब यह नदी सूख गई है।
- विश्व की अन्य प्राचीन बंदरगाहों में यह भी अपना एक ऐतिहासिक स्थान रखती है। विश्व के अन्य प्राचीन बंदरगाह जेल हा (पेरु), ऑस्टिया(रोम), कार्थेज(इटली), हेपु(चीन), कैनोपस(मिस्र), बायब्लोस(गैबेल) आदि हैं।

लोथल परियोजना

- यह परियोजना मार्च 2022 से शुरु हुई। इसे 3500 करोड़ रुपये की लागत में बनाया जा रहा है।
- परियोजना को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल का रूप दिया जा रहा है।
- इसमें प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के ऐतिहासिक साक्ष्यों को संजोया जाना है।
- चार थीम पार्क का संयोजन होना है- मेमोरियल थीम पार्क, एम्यूजमेंट थीम पार्क, मैरीटाइम एंड नेवी थीम पार्क, जलवायु थीम पार्क।
- हड़प्पा की संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए लोथल मिनी रिक्रिएशन बनाया जाना है।
- इसमें दुनिया का सबसे ऊंचा लाइटहाउस संग्रहालय,
- हड़प्पा काल से लेकर आज तक भारत की समुद्री विरासत को उजागर करने वाली 14 दीर्घाएं
- साथ ही भारतीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की विविध समुद्री विरासत को प्रदर्शित करने वाला एक तटीय राज्य मंडप भी होगा।

परियोजना के चरण- चरण 1 व चरण 2 ईपीसी मोड के तहत बनाए जाएंगे और चरण 3 पीपीपी मोड के तहत होना है।
चरण 1A- भारतीय नौसेना व तटरक्षक बल द्वारा उपयोग की जाने वाली दीर्घा, संग्रहालय भवन का एक परिसर व 35 एकड़ भूमि का विकास शामिल है।
चरण 1B- शेष दीर्घा व संग्रहालय का निर्माण होना है। इसमें लाइट हाउस, 5डी डोम थिएटर, बागीचा परिसर व अन्य बुनियादी ढ़ाचों का विकास शामिल है।
चरण 2- राज्य पवेलियन, लोथल सिटी, समुद्री संस्थान, इको रिसॉर्ट्स, मैरीटाइम और नवल थीम पार्क, जलवायु परिवर्तन थीम पार्क, स्मारक थीम पार्क और मनोरंजन पार्क आदि।

परियोजना के लाभ-

- पर्यटन की दृष्टि से विकासात्मक पहल
- रोजगार में वृद्धि
- ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण

गुंजन जोशी

बारबरा मेटकॉफ : सर सैयद उत्कृष्टता पुरस्कार विजेता

बारबरा मेटकॉफ : सर सैयद उत्कृष्टता पुरस्कार विजेता।

संदर्भ- हाल ही में अमेरिकी इतिहासकार बारबरा मेटकॉफ को सर सैयद उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

- यह पुरस्कार उन्हें दक्षिण एशियाई इतिहास व इस्लाम के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित कार्य के लिए दिया गया।
- पुरस्कार अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी द्वारा सर सैयद अहमद खां की 205 वी जयंती पर दिया गया।

बारबरी मेटकॉफ-

- मेटकॉफ ने स्नात्तकोत्तर अध्ययन के दौरान दक्षिण एशिया के उलेमा के इतिहास में रुचि विकसित की।
- मेटकॉफ ने कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय से अपनी पीएचडी की डिग्री पूर्ण की।
- उनका डॉक्टरेट शोध प्रबंध देवबंद के मुस्लिम धार्मिक विद्वानों या उलेमा के इतिहास पर था, जो 19 वीं शताब्दी के अंत में स्थापित उत्तर भारत में एक सुधारवादी धार्मिक मदरसा था।
- अमेरिकन हिस्टोरिकल एसोसिएशन के अनुसार, उलेमा के उर्दू लेखन पर उनके काम से पता चलता है कि वे "परंपरावादी" या "कट्टरपंथी" नहीं थे, जैसा कि अक्सर चित्रित किया जाता है, बल्कि एक अधिक जटिल बौद्धिक और संस्थागत दुनिया में रहते थे।
- उन्होंने तब्लीगी जमात पर भी काम किया है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में उत्पन्न धार्मिक सुधार के अंतर्राष्ट्रीय सुन्नी मिशनरी आंदोलन है।

बारबरा एडन मेटकॉफ की पुस्तकें-

- इस्लाम इन साउथ एशिया इन प्रैक्टिस,
- अ कन्साइस हिस्टारी ऑफ मॉडर्न इंडिया,
- इस्लामिक कन्सैस्टेशन :ऐसे ऑन मुस्लिम इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान,
- इस्लामिक रिवाइवल इन ब्रिटिस इण्डिया : देओबंद(1860-1900)
- अ कंसाइज हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया
- अ कंसाइज हिस्ट्री ऑफ इंडिया
- मेकिंग मुस्लिम स्पेस इन नॉर्थ अमेरिका एंड यूरोप : वॉल्यूम 22

सर सैयद उत्कृष्टता पुरस्कार क्या है-

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय एक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वार्षिक पुरस्कार प्रदान करता है। जिसे सर सैयद अहमद खां के जन्मदिवस पर आयोजित किया जाता है। पुरस्कार निम्न मुद्दों पर दिया जाता है-

- सर सैय्यद अहमद खां अध्ययन
- दक्षिण एशियाई अधिययन
- मुस्लिम मुद्दे
- साहित्य व मध्यकालीन इतिहास
- समाज सुधार
- साम्प्रदायिक क्षेत्र में सद्भाव कार्य
- पत्रकारिता
- अंतर धार्मिक संवाद

YOJNA IAS

सर सैयद अहमद खां-

सैयद अहमद कां का जन्म 17 अक्टूबर दिल्ली के सैयद परिवार में हुआ था। उन्होंने 1830 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी में लिपिक के पद पर कार्य किया। कुछ वर्षों के बाद 1841 में मैनपुरी में न्यायाधीश के पद पर कार्य किया। अपनी श्रेषअठ सेवाओं के कारण ब्रिटिस सरकार ने उन्हे 'सर' की उपाधि दी। 1857 की क्रांति के बाद मुस्लिम समाज सुधार के कार्यों में लिप्त हो गए-

अध्ययन केंद्रों की स्थापना-

- 1858 में मुरादाबाद में आधुनिक मदरसे की स्थापना की।
- 1863 में गाजीपुर में स्कूल की स्थापना की।

साइंटिफिक सोसायटी- इसकी स्थापना 1863 में की गई, इसके द्वारा-

- मुस्लिम समुदाय में वैज्ञानिक प्रवृत्ति उत्पन्न हो तथा भारतीयों को उनकी अपनी ही भाषा में पश्चिमी विज्ञान उपलब्ध कराया।
- पश्चिमी पुस्तकों का स्थानीय भाषा में अनुवाद किया। अलीगढ़ अंस्टीट्यूट गजट समाज की पहली बहुभाषी पत्रिका थी जो 1866 में सर सैयद अहमद खां द्वारा प्रकाशित की गई थी।
- सुधारों के प्रति विरोध के बावजूद सर सैयद खां ने तहजीब-उल-अखलाक पत्रिका प्रकाशित की गई। मुस्लिम समाज सुधार के लिए यह एक महत्वपूर्ण पत्रिका थी।

यूरोपीय पद्धति के कॉलेज की स्थापना-

- अलीगढ़ में 1875 में मदरसतूलउलूम की स्थापना की, और कैम्ब्रिज व ऑक्सफोर्ड की तर्ज पर विश्वविद्यालय बनाने की योजना तैयार की। 7 जनवरी 1877 को मुहम्मडन एंग्लो ओरिएंटेड कॉलेज की स्थापना की गई।
- उनका उद्देश्य इस्लामी मूल्यों के साथ ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली का विश्वविद्यालय बनाना था।
- रुढ़िवादी विरोध के बावजूद 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

YOJNA IAS
yojnaias.com

गुंजन जोशी